ઢોનોં ભાઈ

B.K. Mitr

दोनों भाई

लेखक

ठाकुर श्रीनाथ सिंह

प्रकाशक

'शिशु'-कार्य्यालय,

प्रयाग।

द्वितीय बार] जुलाई, १९३३ ई० [मूल्य ≡)

['शिशु'-पुस्तकमाला सं० ३२]

❀ ❀ ❀

पढ़ो, बढ़ो, भारत सन्तान।
हृदय धरो माता का ध्यान॥
तुम्हीं पर आशा है सारी।
मुख निरखे भारत महतारी॥

❀ ❀ ❀

प्रथमवार—अक्टूबर, १९३२
२५०० प्रतियाँ

❀

द्वितीयवार—जूलाई, १९३३
२००० प्रतियाँ

मुद्रक—पं० सत्यवान आचार्य्य, शिशु प्रेस, प्रयाग।

१—दोनों भाई
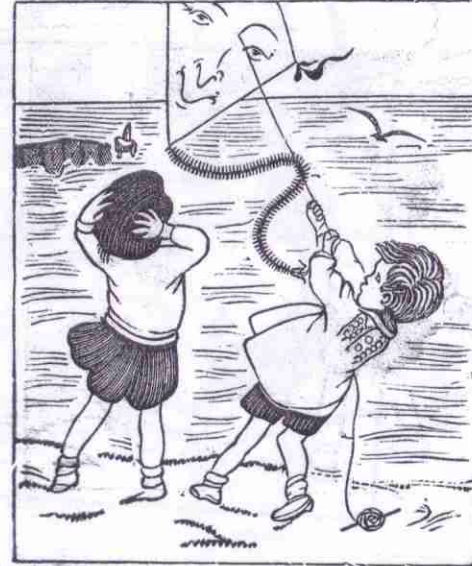
दोनों भाई दोनों भाई,
घर से निकले दोनों भाई।

जाकर पहुँचे नदी किनारे,
तेज हवा में पतङ्ग उड़ाई ॥
दोनों भाई दोनों भाई,
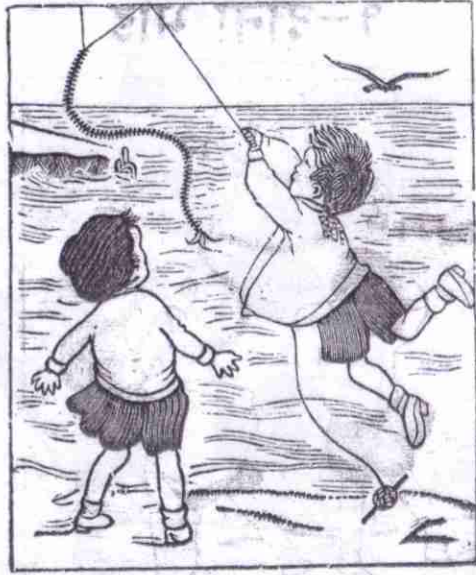
जिस भाई ने पतङ्ग उड़ाई ।
वह भी उसके साथ चला उड़,
खड़ा रह गया छोटा भाई ॥

दोनों भाई दोनों भाई,
गये अलग हो दोनों भाई ।

बोला रोकर, "लौटो-लौटो,"
खड़ा रह गया था जो भाई ॥

दोनों भाई दोनों भाई,
लगा सोचने उड़ता भाई—
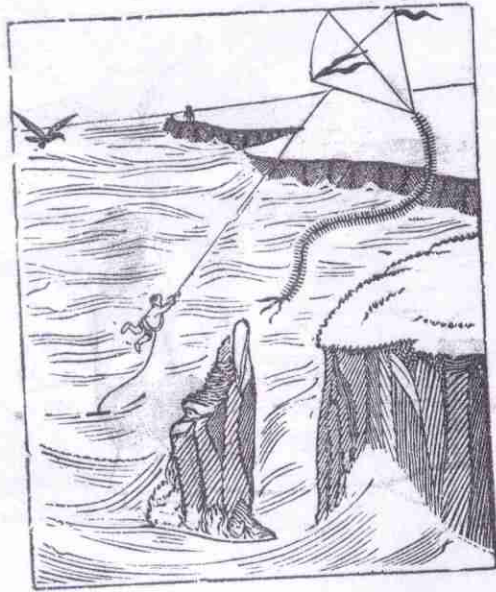
पकड़ इसे क्या पाऊँगा मैं ?
पड़ता जो टीला दिखलाई ॥

दोनों भाई दोनों भाई,
अटक गया टीले में भाई ॥

बहुत डर गया है बेचारा,
क्योंकि न कुछ पड़ता दिखलाई ॥

दोनों भाई दोनों भाई,
बहुत दुखी हैं दोनों भाई।
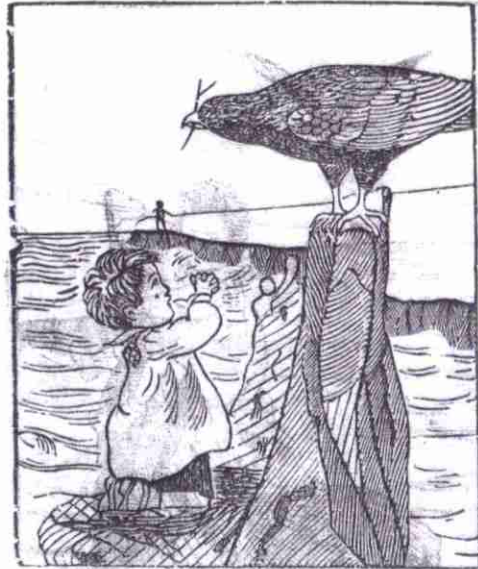
बोली, "बेटा ! मत घबराओ"
चील वहाँ जो उड़ कर आई॥

"पीछे-पीछे ही मैं आई,
यहीं घोंसला मेरा भाई।

लेकर तुमको वहीं चलूँगी;
तुमने जहाँ पतङ्ग उड़ाई॥"

सचमुच चील वहाँ ले आई,
जहाँ खड़ा था छोटा भाई ।

फिर से दोनों मिले गले से,
दोनों भाई दोनों भाई ॥

——

२–दोनों भाई

"क्या खाते हो ? मुझको भी दो ।"
"क्या बकते हो ? चुप हो ! चुप हो !"
ऐसी करते बातें दोनों ।
अपनी करते घातें दोनों ॥
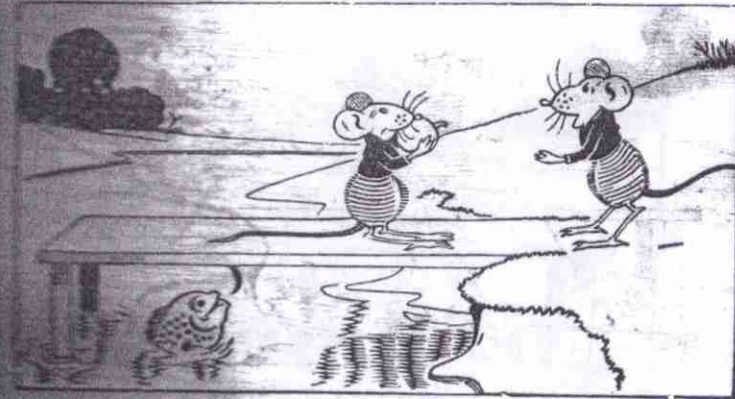
एक नदी के तट पर आये ।
दोनों भाई धाये धाये ॥
एक पड़ी थी चौकी सुन्दर ।
कुछ बाहर कुछ जल के अन्दर ॥

उस पर पहला चूहा आया ।
जिसने पड़ा सेव था पाया ॥
खुश हो वहीं लगा वह खाने ।
और दूसरे को ललचाने ॥
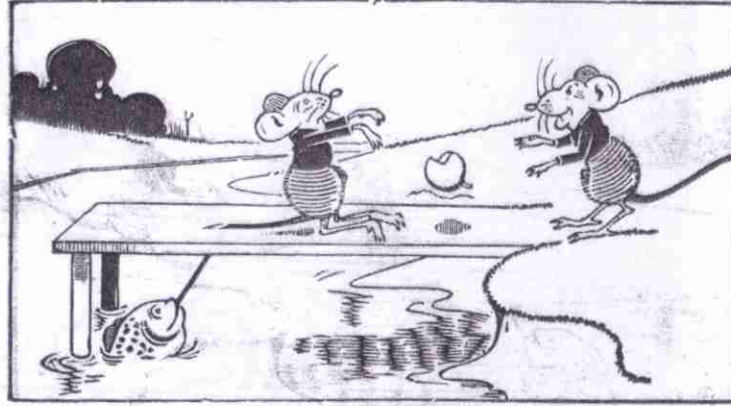
उस तख्ते में एक छेद था ।
जिसका चूहे को न भेद था ॥
उसमें से उसकी दुम झूली ।
झूली दुम पर मछली ऊली ॥

और खींचने लगी अचानक ।
दशा हुई अब बड़ी भयानक ॥
चूँ ! चूँ ! कर वह चूहा रोया ।
हाथ सेव से फौरन धोया ॥
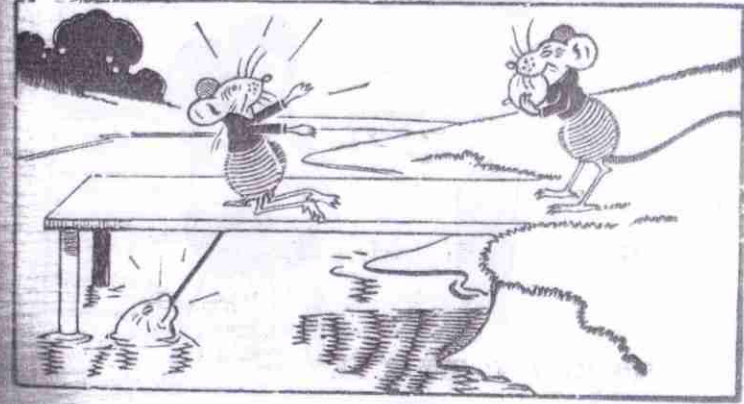
पर खिंचती ही रही अरे दुम ।
जो लख सकते हो बच्चो ! तुम ॥
उधर दूसरे चूहे ने आ ।
लिया भूमि से सेव झट उठा ॥

और लगा खाने खुश होकर ।
किन्तु रह गया पहला रोकर ॥
जो अटके-अटके चिल्लाया—
"लालच करने का फल पाया ॥"

——

३—दोनों भाई

चुन्नू मुन्नू दो भाई थे,
थे वे बड़े खिलाड़ी ।
चल पाती थी कुछ न किसी की
उनके कभी अगाड़ी ॥
किसी रोज वे एक मियाँ जी
के कमरे में आये ।
दो प्यालों पर दो अण्डे
रक्खे थे बिल्कुल खाये ॥
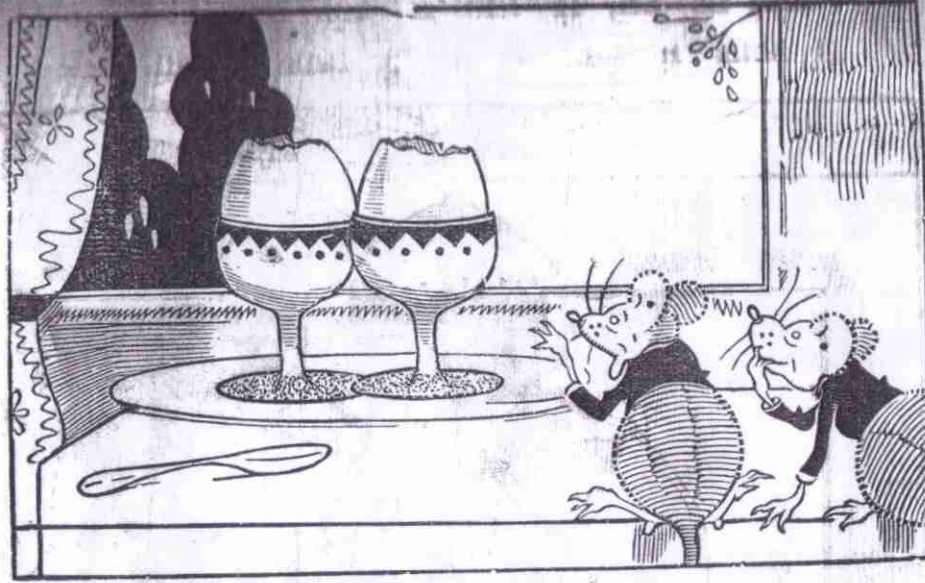
मुन्नू बोला, "चुन्नू भैया ! कैसे पेट भरूँ मैं ?"
चुन्नू बोला, "आ पहुँची बिल्ली, क्या यतन करूँ मैं ?"
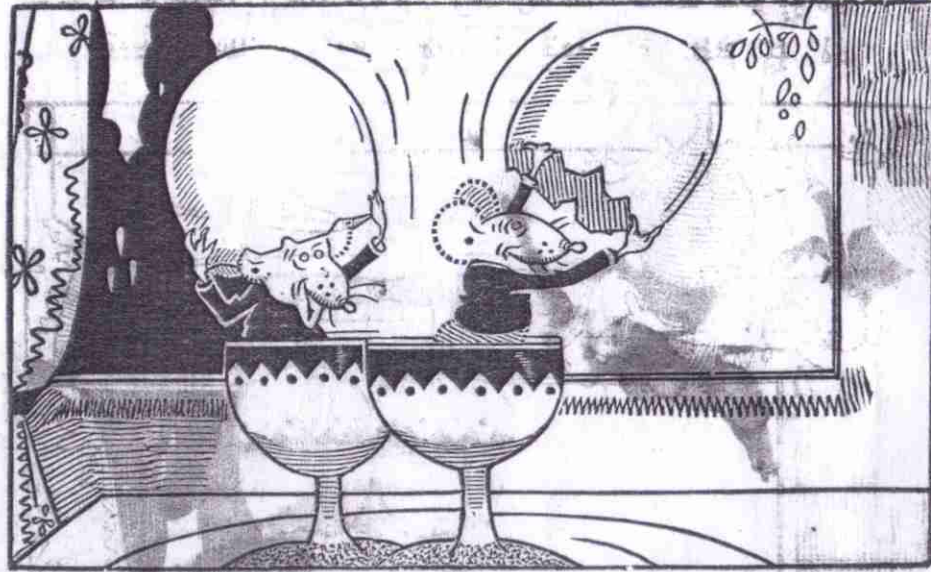
मुन्नू बोला—"आती है, तो तू प्याले में आजा ।"
पोले अण्डे उलट ओढ़ ले, चुप हो, छिप जा राजा ॥
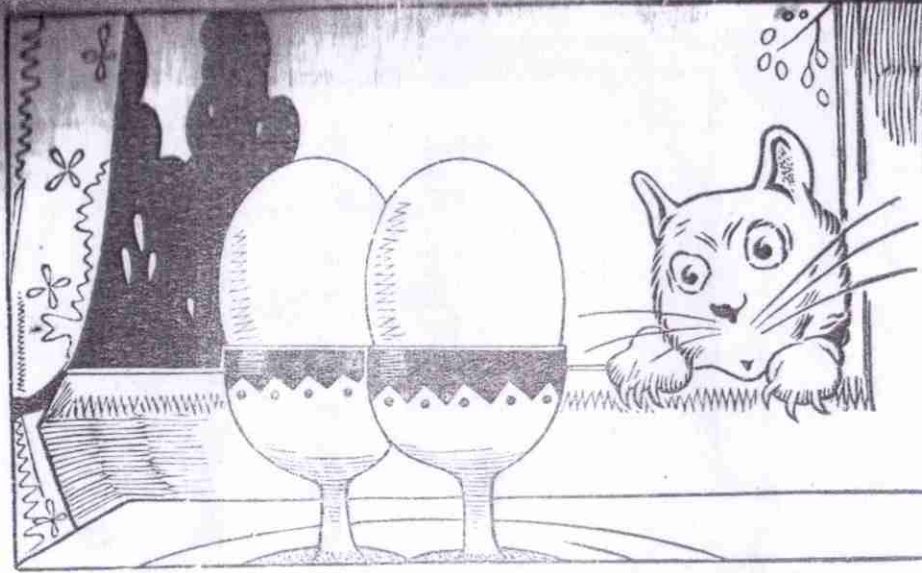
अण्डों में छिप बैठे दोनों, उधर बिलैया आई।
चली गई वह, पड़ा न कुछ अब कमरे में दिखलाई॥
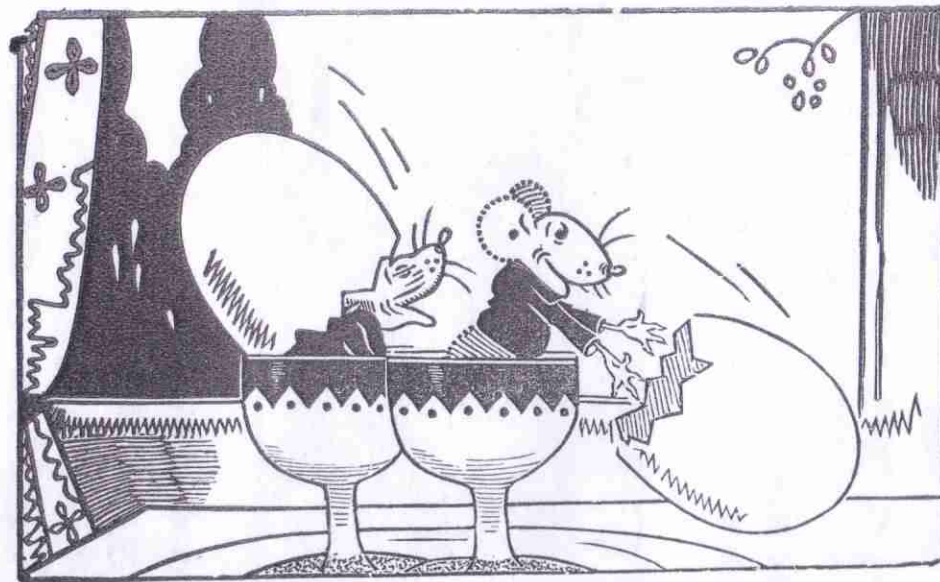
उसका जाना सुन कर चुन्नू बोला, "मुनुआ प्यारे!
खटका मिटा, निकल बाहर, क्या बैठा है मन मारे!"

दोनों भाई

मुन्नू बोला, "यद्यपि हमने
अण्डे आज न खाये।
पर अण्डों ही के द्वारा हैं
अपने प्राण बचाये॥

४–दोनों भाई

चुच्चू बुच्चू दो चूहे थे,
थे वे भाई भाई।
खेल-कूद ही में दोनों ने;
थी सब उमर बिताई॥
उनकी चतुराई से थी अति,
बिल्ली भी चकराती।
उन्हें पकड़ने जो जाता,
उस पर ही आफत आती॥

इस प्रकार वे दोनों भाई,
मद में अपने भूले ।
जहाँ चाहते थे जाते थे,
निर्भय फूले फूले ॥
एक रोज चाहा दोनों ने,
उस थैले को काटा ।
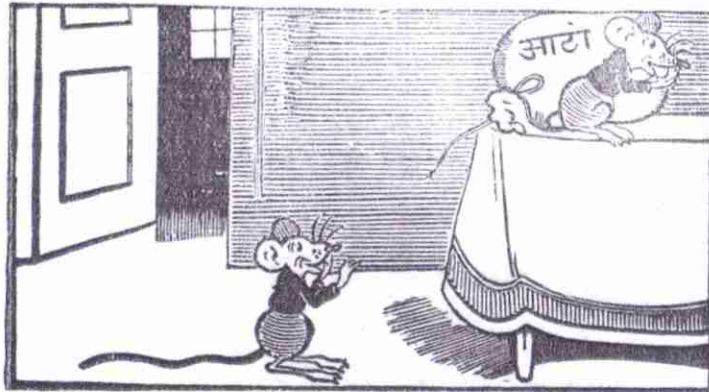
धरा तिपाई पर था जिसमें,
भरा हुआ था आटा ॥
देखें कौन काट देता है,
इस थैले को पहले ।

सोच-सोच वे दोनों भाई,
एक साथ ही उछले ॥
चुच्चू तो चढ़ गया किन्तु,
बुच्चू न सका जा ऊपर ।
उसने सोचा चुच्चू को भी,
क्यों न खींच लूँ भूपर ॥
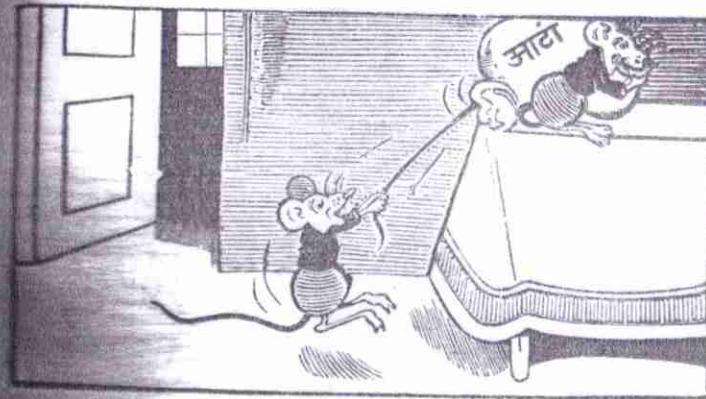
लटकी थी नीचे को डोरी,
थैले के फन्दे की ।
खींचा उसको बुच्चू ने कह—
"जीत हुई बन्दे की ॥"

बात हुई यह, डोरी को था,
चुच्चू की दुम जाना।
खींच उसे चाहा था उसने,
उसको खूब छकाना॥
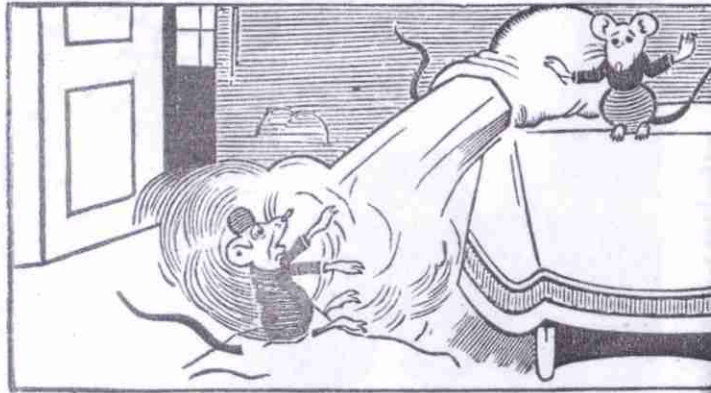
किन्तु हुआ कुछ का कुछ ज्यांही,
फन्दा खुलकर सरका।
जल का मोटी धार की तरह,
आटा उस पर ढरका॥

नाक, कान, मुँह गये सभी भर
छका आप ही बुच्चू।
"अरे हुआ क्या तुमको भाई ?"
चूँ! चूँ! बोला चुच्चू॥
आपस में ही अगर करोगे,
तुम ऐसी चतुराई।
पछताना होगा ऊपर से,
लोग हँसेंगे भाई॥

५—दोनों भाई

दोनों भाई दोनों भाई।
घर से निकले दोनों भाई।
जाकर एक खेत में पहुँचे,
जहाँ एक थी चिड़िया आई॥
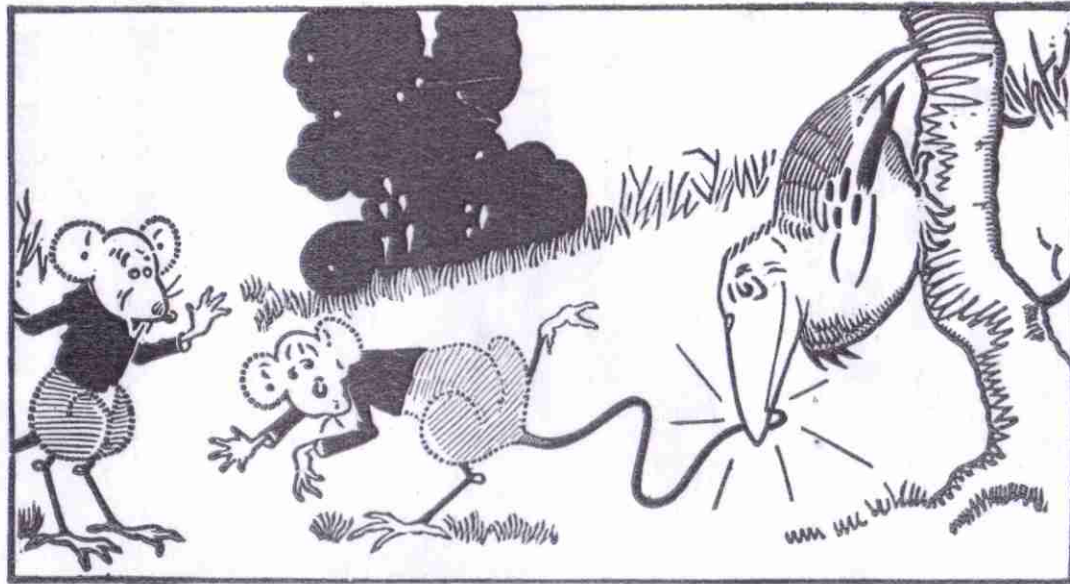
लिया पकड़ उस चिड़िया ने फिर, छोटे भाई की दुम का सिर।
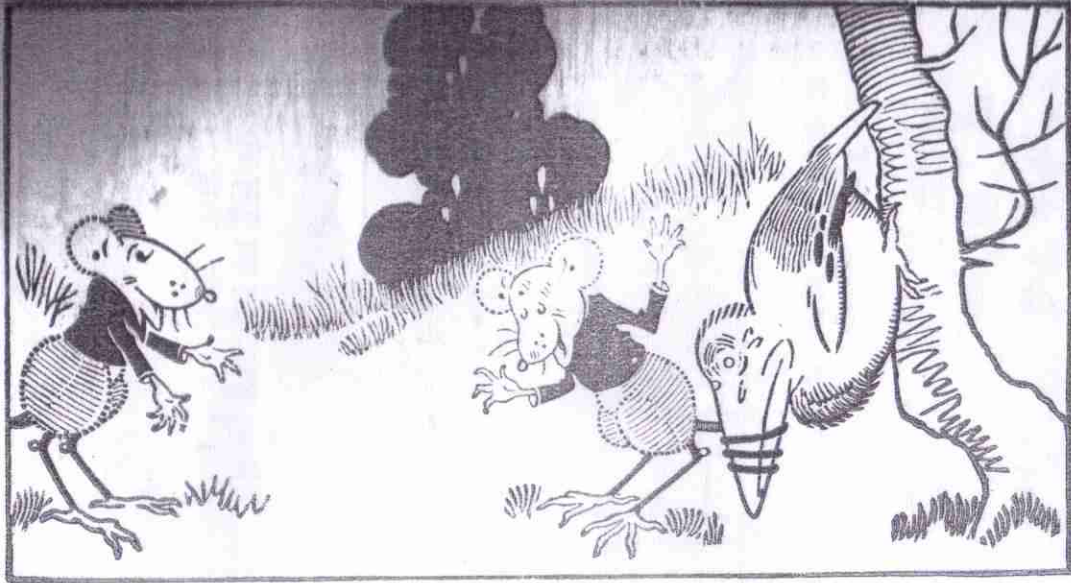
दोनों भाई

चारो तरफ चोंच के उसकी, लगा नाचने जो फेरे फिर ॥

दोनों भाई
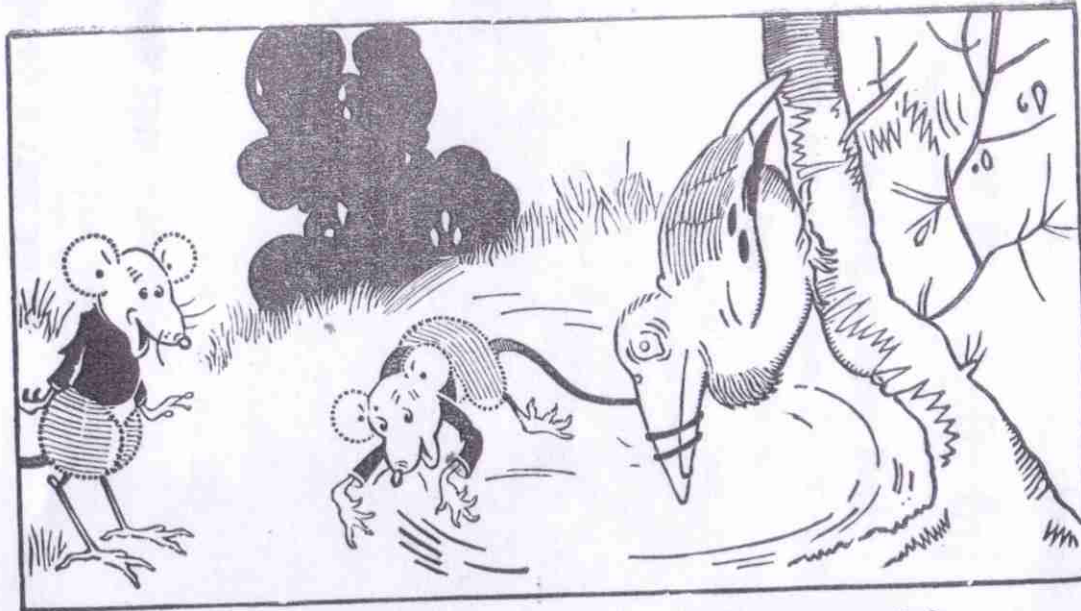
फिर-फिर फेरे पूँछ लपेटी, सारी उसकी चोंच समेटी।
और बिहँस कर बोला, "तुझको, मजा चखाऊँगा अब बेटी!"
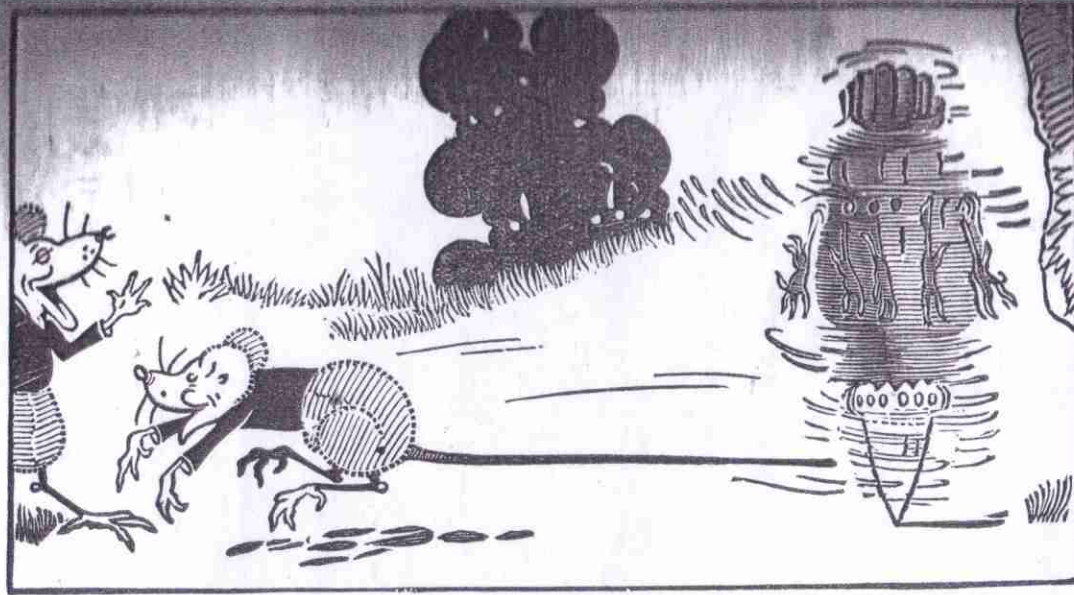
फिर वह करके सर-सर-सट्टू, भागा जैसे तुर्की टट्टू।
हँस कर कहा बड़े भाई ने, "अरे, गयी बन चिड़िया लट्टू।"

६—दोनों भाई

दोनों भाई दोनों भाई,
चले सैर को दोनों भाई।
पर देखा जब साँप सामने,
तब बोले, "अब आफत आई ॥
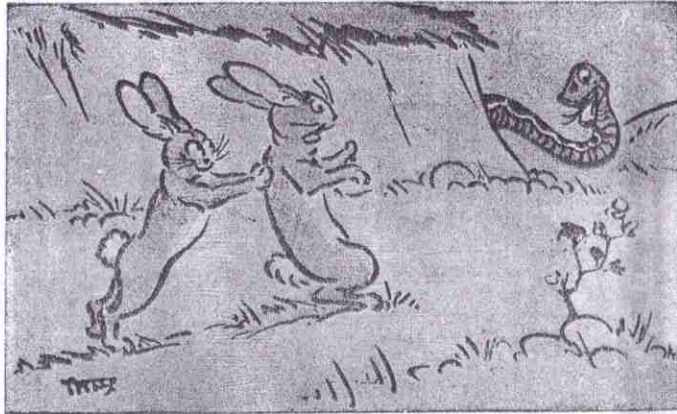
"अरे इधर ही वह आता है,
देखो, कैसा मुँह बाता है।
अब क्या करें उपाय हाय ! हम,
कुछ भी नहीं कहा जाता है ॥"

आगे बढ़ा साँप काढ़े फन,
उस पर ही दौड़े दोनों जन।
जिन्हें पकड़ने में जल्दी से,
फन्दा सा वह साँप गया बन ॥
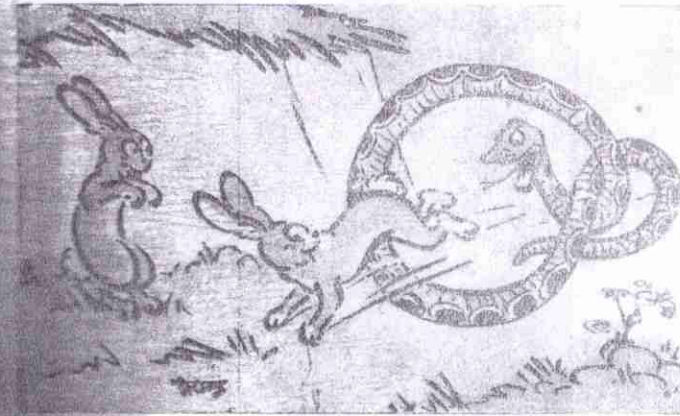
फिर उस फन्दे में से सर-सर,
दोनों निकले बाहर भीतर।
गया जहाँ का साँप तहाँ रह,
कई एक फन्दों में बँधकर ॥

"हमको नहीं पकड़ पाओगे,
खुद ही तुम धोखा खाओगे।
गाँठ पड़ी रस्सी से उलझे,"
दोनों बोले, "रह जाओगे॥"
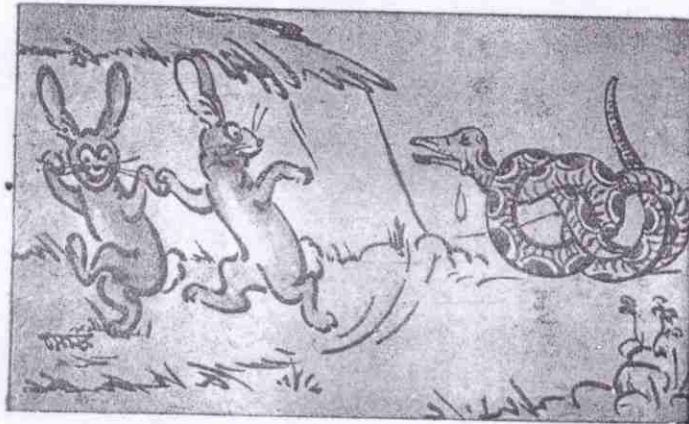
यों खरगोशों की बन आई,
नागराज ने मुँह की खाई।
हँसते-हँसते घर जाते हैं,
देखो बच्चो, दोनों भाई॥

७—दोनों भाई
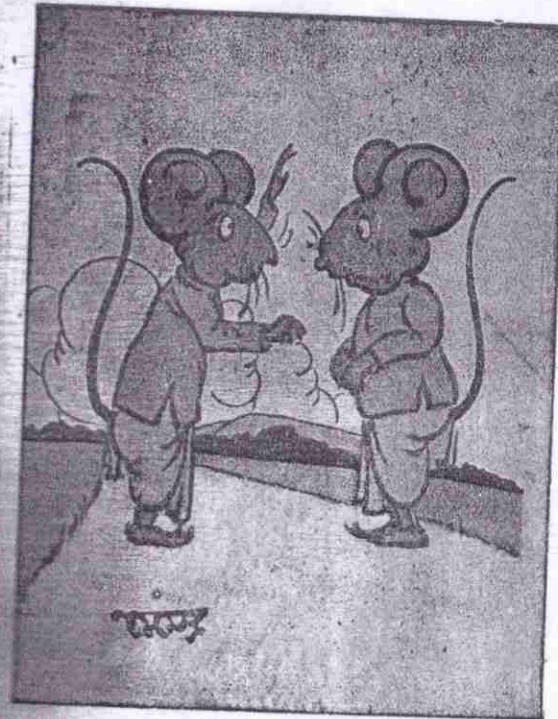
बिल से निकले बाबू बन कर।
बोल रहे हैं अब चूँ-चूँ कर—
"जहाँ न होगा बिल्ली का डर।
वहीं लगावेंगे हम चक्कर॥"

८—दोनों भाई
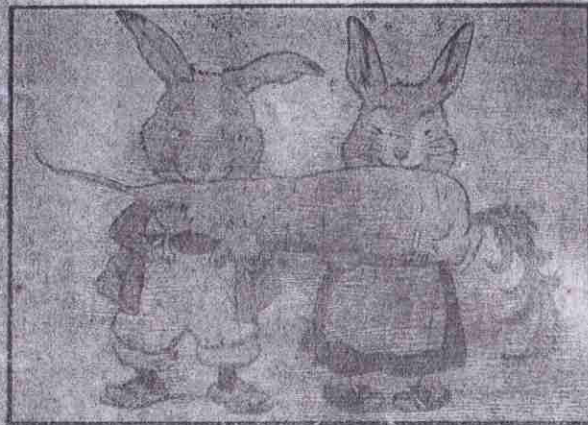
दोनों भाई मिलकर खाते
इतना लम्बा खाना।
तुम भी लो, गाजर खा जाओ
अगर चाहते आना॥

॥ इति ॥

बाल-साहित्य
के सर्व-श्रेष्ठ प्रकाशक

'शिशु'-कार्य्यालय, प्रयाग

से प्रकाशित
'शिशु'-पुस्तकमाला की

सर्वोत्तम बालोपयोगी पुस्तकें

पुस्तकें क्या हैं—हँसी-खुशी का ख़ज़ाना, उछल-कूद की पिटारी, शिक्षा की सन्दूकची और तन्दुरुस्ती की कुंजी हैं। इनको पाकर बच्चे प्रसन्न, नीरोग और विद्वान होते हैं।

भारतवर्ष में

हिन्दी की बालोपयोगी पुस्तकों

का

सबसे बड़ा, सबसे पुराना और सबसे प्रसिद्ध

प्रकाशक और विक्रेता

'शिशु'-कार्य्यालय, प्रयाग

ही है। यहाँ से

बालक-बालिकाओं के लिये जितनी अच्छी और सस्ती सुन्दर और सरल, रोचक और उपयोगी, आकर्षक और शिक्षाप्रद पुस्तकें प्रकाशित होती हैं उतनी और कहीं से भी नहीं होतीं। इन पुस्तकों को बच्चे बड़े चाव से पढ़ते और खुश होते हैं। साथ ही साथ इनसे उन्हें कई प्रकार की उपयोगी शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्त होता है।

'शिशु' प्रेस, प्रयाग।